ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हिंदी ऑनलाइन कक्षा में आप सभी का स्वागत है|

कक्षा -६

हिन्दी

पाठ -3

ईश्वर जो करता है ,
अच्छा ही करता है

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

3 ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है

चिंतन-मनन

ईश्वर एक अनदेखी लेकिन अनुभव की जाने वाली शक्ति है। वह संसार का निर्माता है। वह जो भी करता है, सोच-समझकर करता है। लेकिन मनुष्य बिना-सोचे समझे भगवान (ईश्वर) पर दोष थोप देता है।

एक बार दो मित्र निखिल और गौरव नगर की ओर गए। निखिल छोटा और गौरव लंबा था। निखिल बोला–"तुम ईश्वर के श्रेष्ठ भक्त हो। तुम उसकी सारी रचना को दोष रहित मानते हो लेकिन मैं देखता हूँ कि ईश्वर की रचना त्रुटिपूर्ण है। इधर ही देखो, तरबूज और पेठा (सीताफल) तो लताओं पर लगे हैं। ये लताएँ कमज़ोर और पतली हैं। ईश्वर ने मोटे और भारी फल तो लताओं पर उगा दिए और मोटे तथा बड़े वृक्षों पर जामुन आदि छोटे-छोटे फल लगा दिए। आश्चर्य है कि ईश्वर की यह रचना दोष से भरी है।"

दोषों को देखने वाला निखिल सिर से गंजा था। वह सूर्य की गरमी से व्याकुल होकर मित्र से बोला–"यह हरा-भरा विशाल वृक्ष है। आओ, वृक्ष के नीचे आराम करते हैं।"

शब्दार्थ-

मित्र- दोस्त,मीत
श्रेष्ठ- महान
दोष रहित- दोष न होना
त्रुटिपुर्ण- दोष होना,दोष सहित
लताएं- बेल
आश्चर्य- अचरच
गंजा- सिर पर बाल न होना
वृक्ष- पेड़
व्याकुल- बेचने, परेशान

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

अर्थबोध-

*निखिल और गौरव दो मित्र हैं।
*निखिल छोटा और गौरव लंबा था।
*निखिल नास्तिक और गौरव आस्तिक था।
*निखिल ईश्वर के रचना को त्रुटिपूर्ण मानता था।
*बड़े वृक्ष पर छोटे फल और छोटे वृक्ष पर बड़े फल पर दोनों मित्रों का चर्चा।
*दोनों मित्र शहर के तरफ जा रहे थे।
*सूर्य की गर्मी से व्याकुल होकर विशाल वृक्ष के नीचे आराम करते हैं।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

संबंधित प्रश्न-

१. दोनों मित्रों का नाम क्या था?
२. कौन छोटा और कौन बड़ा था?
३. आस्तिक कौन है?
४. नास्तिक कौन है?
५. निखिल ईश्वर के रचना को क्या मानता है?
६. दोनो दोस्त कहां बैठे थे?
७.दोनो दोस्त कहां जारहै थे?

गृहकार्य- पढ़ाए गए पाठ को पढ़ो।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow